THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-04 | Issue-03 | October-2025
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.17

बोध स्तर पर अध्ययनरत छात्र/छात्राओं में पर्यावरण शिक्षा, उद्देश्य,जागरूकता एवं प्रदूषण का एक माध्यम

कमल कान्त गौतम[1] एवं डॉ० किरण सिंह[2]

[1]शोध–छात्र (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज
[2]शिक्षक–शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज
[2]Email: kamalkan9085@gmail.com

सारांश:

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है । समाज सामाजिक संबंधों एवं आवश्यक आवश्यकताओं की क्रियाओं के कारण एक दूसरे से स्पष्टसंबंध होता है। व्यक्ति समाज के प्रति भी कुछ उत्तरदायित्व होता है उनमें से एक प्रमुख उत्तरदायित्व ज्ञान एवं अध्ययन का केंद्र विद्यालय की स्थापना करना है। यह काम अब समाज एवं राज्य के परस्पर सहयोग से हो रहा है। प्राचीन काल में ऐसा नहीं था। विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं किशोरावस्था में होते है, जीवन की यह वह व्यवस्था है, जिसमें तीव्र बदलाव आता है। यदि सही समाज हो तो जब छात्र-छात्राएं पर्यावरण एवं उससे जुड़ी विभिन्न समस्याओं एवं उसके समाधान पर जागरूक किया जाय। माध्यमिक स्तर पर शिक्षक अपने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हुए विषय वस्तु में पठन-पाठन के नाम पर्यावरण के प्रति संचालन भावनात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष का विकास अपने छात्र-छात्राओं में करें 21वींसदी के सहायक पर्यावरण की समस्या चिंताजनक हो गई। खानपान एवं सामग्री विभिन्न तकनीकों का बढ़ता प्रयोग के साथ सभी क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमता का बढ़ता प्रचलन भावी पीढ़ी एवं मानवीयता पर क्या प्रभाव डालेगी। यह सब भावी अवलोकन का विषय है। प्रस्तुत आलेख में बोध स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण एवंअधिगम में पर्यावरणीय तत्वों एवं शिक्षा का अध्ययन जागरूकता एवं प्रदूषण की दृष्टिकोण से किया गया है।

मुख्य शब्द: की वर्ड *- बोध, बोध स्तर, शिक्षा, प्रदूषण, विद्यार्थी इत्यादि ।*

प्रस्तावना- शिक्षा का उद्देश्य एवं कार्य ज्ञानवर्धन करना मात्र नहीं होता। शिक्षा बालक के व्यक्तित्व के अध्ययन का साधन है। शिक्षा के साथ प्रत्येक स्तर छात्र-छात्राओं की सूझ-बूझ एवं व्यवहारिक जीवन में उपयोग करना आना चाहिए। शिक्षा के अध्ययन से पर्यावरण के सैद्धांतिक पत्र का ज्ञान करना एवं प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। अत्यधिक स्तर पर अध्ययन के दौरान गतिविधि का सहभागिता एवं उसका व्यवहारिक जीवन में पर्यावरणीय सुरक्षा एवं संरक्षण की पोस्ट से समाप्ति करने पर ध्यान रखना चाहिए।

शिक्षक और विद्यालयी समाज के साथ-साथ इनमें से संधिएवं अभिभावक तथा सामाजिक कार्य कर्ताओं की भी जिम्मेदारी होनी चाहिए । प्रत्येक किशोरावस्था की आयु वर्ग के किशोर एवं किशोरियों को वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं से अवगत कराये तथा समय-समय पर उन्हें जागरुक करते रहे

। जिससे वह स्वयं के लिए दूसरों के लिए तथा आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण के प्रति सुधारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सके। प्रस्तुत अध्ययन बोधस्तरीय माध्यमिक 9वीं से लेकर 12वीं कक्षा तक के छात्र/छात्राओंको शामिल किया गया है।

शिक्षा का अर्थ- मूलतः शिक्षा का अर्थ सीखना या सीखाना अर्थात यह एक ऐसे कौशल तर्क का विकसित होना पाया जाता है। जिसके माध्यम से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूपसे विद्यार्थी का अन्य व्यक्ति अपने जीवन में संतुलन विकसित करती है।

परिभाषा- शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया होती है। शिक्षा वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, मूल्य एवं नैतिकता और जीवन के लिए आवश्यक आदतें प्रदान करती हैं। यह न केवल बौद्धिक विकास को बढ़ावा देती है बल्कि व्यक्ति का समग्र निर्माण करती है। ताकि व्यक्ति समाज में सकारात्मक योगदान देसकें।

अभिप्राय- शिक्षा के माध्यम से मानव अपने व अपने पर्यावरण का स्वतः संतुलन में मूल्यांकन हेतु निर्माण करती है।

शिक्षा के प्रकार- शिक्षा मुख्यतः तीन प्रकार के होती हैं।

1-औपचारिक शिक्षा- यह व्यवस्थित एवं संरक्षित प्रक्रिया है जो स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों जैसे संस्थानों में होती है।

विशेषताएं-

1-प्राथमिक कक्षा 1 से 5 माध्यमिक कक्षा 6 से 12 और उच्च शिक्षास्नातक, स्नातकोत्तर में विभाजित है।

2-निर्धारित पाठ्यक्रम शिक्षक और परीक्षाएं निर्धारित स्थान पर होतीहैं।

उदाहरण- सरकारी या निजी स्कूलों में पढाई।

उद्देश्य- डिग्री या प्रमाण पत्र प्राप्त करना।

2-औपचारिक शिक्षा- औपचारिक शिक्षा दैनिक जीवन की प्राकृतिकप्रक्रिया है जो बिना किसी औपचारिक संरचना के होती है।

विशेषताएं

1-कोई निश्चित समय सीमा व पाठ्यक्रम नहीं होता है।

2-रिश्तेदार, परिवार, मित्र, मीडिया से सीखना। उदाहरण घर पर माता-पिता से भाषा सीखना या टी0 वी0, इंटरनेट से सामान्य ज्ञानप्राप्त करना।

उद्देश्य- सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना।

3-गैर औपचारिक शिक्षा- यह औपचारिक न होकर भी संचारित होती है और बालको या विशेष लोगों के तरह तैयार किया जाताहै।

विशेषताएं- यह लचीला समय कार्यशालय या ऑनलाइन कोर्स संबंधित है।

1- डिग्री

2- यहाँ एक प्रमाण पत्र मिल सकता है। लेकिन डिग्री जैसा नहीं यह शिक्षा एक दूसरे के प्रमुख है और व्यक्ति के संग्रह विकास मेंयोगदान देते हैं।

पर्यावरण का अर्थ-

पर्यावरण = पर्याय = चारों ओर

आवरण = घिरा युवा।

इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ है चारो ओर से घिरा हुआ।

पर्यावरण शिक्षा का अर्थ- पर्यावरण शिक्षा एवं पर्भाषा विलियम बी०स्टैंट को पर्यावरण शिक्षा का जनक माना जाता है। उन्होंने सन1969 में द जर्नल ऑफ एनवायरमेंट एजुकेशन में पर्यावरण शिक्षा की परिभाषा दी थी।

पर्यावरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति पर्यावरण संबंधित मुद्दे के बारे में जागरूकता फैलाते हैं। इन्हीं मुद्दों के कारण और प्रभावशीलता का पत्र तथा विश्लेषण करते हैं। जिससे इसके प्रति अत्यधिक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं। और समस्या समाधान हेतु जर्नल देते है। जिससे पर्यावरण स्थिरता को बढ़ावा मिल सके। पर्यावरण शिक्षा मनुष्य के पर्यावरण तथा उसके प्रकारों का अवलोकन करवाकर मानव और पर्यावरण संबंधों का ज्ञान करवाती है। पर्यावरण शिक्षा से ही स्पष्ट होता है कि किस प्रकार पर्यावरण मनुष्य का पालन पोषण करता है।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं उसकी समीक्षा- हमें पर्यावरण के प्रति अधिक लगाव एवं जागरूकता होना चाहिए। जिससे हम अपने आस-पास, साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें जैसे आस-पास में चिमली या भट्टा या बड़े-बड़े कारखाने न हो और नालियों के गंदे पानी का जमाव न हो।

हमें अपने आस-पास कूड़ा-कचरा एकत्रित एवं जलाना नहीं चाहिए। पॉलिथीन या प्लास्टिक जैसे कचरे को आबादी से दूर क्षेत्रमें डंप या किसी गर्त में फेंकना चाहिए। घरों से निकला हुआ साग-सब्जी और सड़े-गले, फल-फूल, गोबर, पेड़-पौधे के पत्तों को किसी गर्त में डालना चाहिए। जिससे कंपोस्टिंग खाद का निर्माण हो सके। पर्यावरण घटकों जैसे वायु, जल, मिट्टी और जीवों के बारेमें जानना।

वर्तमान समय में पर्यावरणीय की शिक्षा-

आज के समय में पर्यावरण की समीक्षा अति आवश्यक हो गई है। सभी लोगों को भली-भांति ज्ञात है कि वातावरण में पेड़-पौधे नहीं रहेंगे तो मानव तथा पशुओं का जीवन दुर्लभ हो जाएगा। जंगली जानवरों को रहने के स्थान पर या उनका खान-पान व चरने का स्थान एवं वायु में सांद्रता अधिक हो सकती है। जिससे जंगली जीव अत्यधिक खतरे में पड़ सकते है। जिससे भविष्य की स्थिति भयावाह हो सकती है तथा पृथ्वी का तापमान बढ़ सकता है। जिससे पृथ्वी की परिस्थितियों विषम हो सकती है। क्योंकि हवा, पानी, जमीन, जीव-जंतु एवं वृक्षों का अस्तित्व संकटमें पड़ सकता है।

पर्यावरणीय शिक्षा का उद्देश्य- पर्यावरण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूक करना उन्हें इसके बारे में शिक्षित और पर्यावरण की रक्षा करने के लिए प्रेरित करना। यह लोगों को पर्यावरण से संबंधित मुद्दों को समझने और समस्या का समाधान करने में मदद करता है। साथ ही उन्हें पर्यावरण शिक्षा के संरक्षण के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से काम करने के लिए उत्साहित करना।

पर्यावरणीय शिक्षा का उद्देश्य- पर्यावरण शिक्षा का मुख्य उद्देश्यलोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूक करना उन्हें इसके बारे मेंशिक्षित और पर्यावरण की रक्षा करने के लिए प्रेरित करना। यहलोगों को पर्यावरण से संबंधित मुद्दों को समझने और समस्या कासमाधान करने में मदद करता है। साथ ही उन्हें पर्यावरण शिक्षा केसंरक्षण के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से काम करने के लिएउत्साहित करना।

वर्तमान समय में प्रदूषण एक ज्वलंत्र समस्या- समयानुसार देखा जाए तो वर्तमान में प्रदूषण एक गंभीर समस्या है। यह पृथ्वी परविभिन्न रूपों में दिखाई देता है। जैसे- जलवायु, ध्वनि इत्यादि। यह मानव स्वरूप एवं पर्यावरण के लिए हानिकारक है। प्रदूषण के कारण होने वाले प्रभाव जैसे- विभिन्न प्रकार के रोगों का फैलना जलवायु परिवर्तन एवं पारिस्थितिक तंत्र का क्षरण होता है।

पर्यावरण प्रदूषण होने के प्रमुख कारण है, जो निम्नवत है-

औद्योगीकरण वाहन कृषि हेतु-

पदार्थ अपशिष्ट प्रबंधन शहरीकरण एवं वनोन्मूलन आदि इन सभी समस्याओं से बचने के लिए सरकार मानव को स्वयं सुधार करना होगा। जैसे- औद्योगिक और गतिविधियों का रोकथाम करना प्रदूषित वाहनों का उपयोग न करना, वृक्षारोपण करना एवं कटाव को रोपना, हरित क्रांति को बढ़ावा देना। जैविक आदर्श द्वारा लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाएँ व संरक्षण हेतु कार्यक्रम चलाएँ एवं नई तकनीकी का उपयोग करना और अंतरराष्ट्रीय योजना व कार्यक्रम को बढ़ावा देना।

परदूषित वातावरण का मानव स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभाव-

प्रदूषण का अर्थ है कि प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना,अशुद्धी, वायु, भोजन एवं जल का होना, जिससे पर्यावरण में संतुलन एवं मानव तथा पेड़-पौधे अत्यधिक मात्रा में प्रभावित होना।

वातावरण में अत्यधिक प्रदूषण होते हैं ओजोन (O^3) परतों का तेजी से क्षरण होना जिससे अल्ट्रावायलेट किरण पृथ्वी पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ने पर मानव व पेड़-पौधों का जीवन अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। विभिन्न प्रकार के गैसों का वातावरण में विसर्जित जैसे- CO_2, O_2, SO_2, NO_2, CH_3 CFC इत्यादि जलवायु का परिवर्तन होना, बाढ़ का प्रकोप, वातावरण में विषैली गैसों का सांद्रता अधिक होना, मानव के अमूल्य संप्रदाय तथा प्राकृतिक संसाधनों का नष्ट होना, जिससे मानव तथा पशु-पक्षी व पेड़-पौधों के जीवन का अस्तित्व दुर्लभ होता जा रहा है।

परदूषण समसया समाधान में छात्र-छात्राओं को निर्देशन-

प्रदूषण की समस्या के समाधान में छात्रों को जागरूकता और सांस्कृतिक रूप से शामिल करने के लिए उन्हें शिक्षा जागरूकता तथा भागीदारी के माध्यम से निर्देशित किया जा सकता है। उन्हें प्रदूषण के कारणों एवं प्रभावों और समाधानों के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए। और व्यक्तिगत स्तर पर प्रदूषण कम करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष- शिक्षा विशेष कर पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह छात्रों को पर्यावरण समस्याओं के बारे में ज्ञान प्रदान करती है। उन्हें इन समस्याओं के प्रति और भी ज्यादा सजक एवं जागरूक करती है। और उन्हें समस्याओं का समाधान खोजने में तथा पर्यावरण की रक्षा के लिए जिज्ञासा उत्पन्न कराती है। पर्यावरण शिक्षा एक महत्वपूर्ण शिक्षा है। वह स्वयं उपकरण है जो छात्रों को पर्यावरण के विभिन्न समस्याओं के बारे में जागरूक कराते है और उन्हें जिज्ञासा हेतु प्रेरित करती है। पर्यावरण या शिक्षा छात्र-छात्राओं को ज्ञान कौशल तथा उनके व्यवहार को भी बदलता है। जिससे यह पर्यावरण संरक्षण हेतु सक्रिय भूमिका अदा कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. क्षमा, जे., गुप्ता, ओ.पी., और मुखर्जी, के. (2005), पर्यावरणशिक्षा-8, गीता पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

2. कौल, एल. (2009) शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति (चौथासंस्करण)। विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

3. कोठारी, सी.आर. (1990) शोध पद्धति विधियाँ और तकनीकें (द्वितीय संस्करण) विलेईस्टर्न लिमिटेड, नई दिल्ली।

4. एन.जे. गुप्ता, ए. (2000). पर्यावरण शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका.पी.पी. गोकुलनाथनपई (सं.), पर्यावरण शिक्षा-एक पूर्वोत्तर भारतविकास परिप्रेकष्य नॉर्थ-ईस्टर्नहिलयू निवर्सिटी पब्लिकेशन।

5. ग्रोक युट्यूट

Cite this Article:

कमल कान्त गौतम एवं डॉ० किरण सिंह, "बोध स्तर पर अध्ययनरत छात्र/छात्राओं में पर्यावरण शिक्षा, उद्देश्य,जागरूकता एवं प्रदूषण का एक माध्यम" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, pp.138–141. https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.17

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

कमल कान्त गौतम एवं डॉ० किरण सिंह

For publication of research paper title

बोध स्तर पर अध्ययनरत छात्र/छात्राओं में पर्यावरण शिक्षा, उद्देश्य,जागरूकता एवं प्रदूषण का एक माध्यम

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-03, Month October, Year-2025.

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.17